श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ६ अंक : ६५ सितम्बर-२०१२

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०३.	श्री शालिग्राम	०४
०४.	अभाव-अवगुण	०६
०५.	दिव्यज्ञान, उद्धवगीता	०८
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१०
०७.	सत्संग बालवाटिका	१२
०८.	भक्ति सुधा	१४
०९.	सत्संग समाचार	१८

॥ अस्मदीयम् ॥

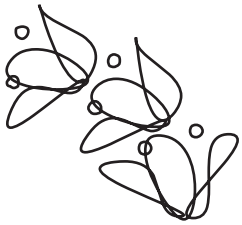

अपना देश वर्तमान में विषम परिस्थिति से गुजर रहा है। देश के प्रधानमंत्री तथा पक्ष के लोगों के विरोधमें विरोधी पार्टी का वाक्युद्ध चल रहा है। हमलोगों ने जिनका चयन किया ऐसे पक्ष के नेता अपने शिष्टाचार भूल गये हैं। आजादी मिली उस समय जो वचन देकर तत्कालीन सत्य निष्ठावान मूल्यों से अनुप्राणित नेता देश का उज्ज्वल भविष्य बनाये थे। क्योंकि वे लोग अपनी मातृभूमि भारत देश के लिये कार्य कर रहे थे। प्रजा के लिये कार्य कर रहे थे। उस समय उनका परिवार पूरे भारत देश के नागरिक थे। यह सब आज भूल गया है। भ्रष्टाचार की सीमा नहीं है। आसाम में प्रतिदिन निर्दोष लोगों की जान जा रही है। दिल्ली के तख्ता पर रामलीला मैदान में वर्तमान सरकार तथा भ्रष्टाचार को उखाड़ फेकने के कार्यक्रम चल रहे हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में गुजरात में भी प्रत्येक एक दूसरे पर आक्षेप प्रत्याक्षेप करके भोली जनता को भरमाकर लूट रहे है। यह देखकर प्रामाणिक एवं सत्यनिष्ठलोगों को बहुत आद्यात पहुँच रहा है। हम भारतभूमि के सपुत हैं। इसलिये यह सब देख कर बहुत दुःख एवं ग्लानि होती है।

श्री नरनारायणदेव के दरबार में श्रावण मास तथा अधिक मास में श्रीहरि के आश्रितो को भजन-भक्ति करने का आनंद है। जो भगवान श्री स्वामिनारायण की आज्ञा का पालन करता है उसे सुख एवं शांति मिलती है। जो आज्ञापालन नहीं करते उन्हें सार्वत्रिक दुःख ही दिखाई देता है। इसलिये प्रभु की आज्ञा में रहकर भजन भक्ति करने में ही सुख है। अपना तो जन्म सार्थक है। अपने उत्सवों की परम्परा चालू है। आगे जलझीलणी एकादशी को भगवान गणपति की पालकी तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का प्रागट्योत्सव क्रमशः आनेवाला है। इन उत्सवों का दर्शन लाभ मिलेगा, इन उत्सवों में भाग लेना ही सुख है और शास्वत आनंद है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अगस्त-२०१२)

१. प.भ. दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल (स्कीम कमेटी सदस्य) की तरफ से आयोजित कथा पारायण प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा में पदार्पण।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया यज्ञ की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण।

१८. से १९. तक श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) महा आरती प्रसंग पर पदार्पण।

२०. अधिक पुरुषोत्तम मास के निमित अ.नि. पभ. रणछोड़भाई परिवार के यजमान पद पर परम कृपालु श्री नरनारायणदेव का महाभिषेक षोडशोपचारपूर्वक अपने वरद् हाथों से संपन्न किये।

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क कथा प्रसंग पर पदार्पण।

२२. से ५. सितम्बर-२०१२ विदेश यात्रा अमेरिका में बोस्टन, कोलोनिया, सिनेमेन्सन तथा फ्लोरिडा (आई.एस.एस.ओ.) श्री स्वामिनारायण मंदिर के वार्षिक पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : **www.jetalpurdarshan.com**
महेसाणा : **www.mahesanadarshan.org**
नारायणघाट: **www.narayanghat.com**
छपैया: : **www.chhapaiya.com**
टोरडा : **www.gopallalji.com**
वडनगर : **www.vadnagar.com**

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १९-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री शालिग्राम

साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

आदि काल से तथा पौराणिक पूजाविधिमें राम स्वरुप में साक्षात् नारायण भगवान प्रगट रुप में माने जाते हैं । इसीलिए प्राण प्रतिष्ठा आवाहन-विसर्जन इत्यादि की आवश्यकता नहीं होती । शालिग्राम स्वरुप के साथ ही भगवती तुलसी देवी का नित्य संयोग माना जाता है । पूर्व के समय में जालंधर असुर की पत्नी जिसका नाम था वृन्दा, वह महान पतिव्रता नारी थी । पतिव्रता के पुण्य प्रभाव से पतिजालंधर अन्य स्त्रियों का पातिव्रतभंग करवाता था । एकवार पार्वतीका शीलभंग करने का प्रयास किया-जिससे शिव-जालंधर का भीषण संग्राम हुआ । लेकिन जालंधर अमर रहा । यह देखकर देवता लोग भगवान विष्णु के पास गये और भगवान विष्णु जालंधर का ही रुपवनाकर उसकी पत्नी वृन्दा का पातिव्रतनष्ट किया । इससे वृन्दाने भगवान विष्णु को जडशिला बनने का श्राप दिया, वृन्दा को भगवान विष्णुने वृन्दा (तुलसी) वृक्ष होने का श्राप दिया । वृन्दा को भगवान के चरण में अति अनुराग होगया जिससे भगवानने उसे अपने चरण में रहने का स्थान दिया । विष्णु-शालिग्राम तथा लक्ष्मी - वृन्दा तुलसी हुई । उसी समय से तुलसी तथा शालिग्राम की पूजा करने वाले को भगवान के चरण में अनुराग होता है।

शालिग्राम की पूजाविधिमें कितने नियम शास्त्रों में बताये गये हैं । शालिंगराम की उत्पत्ति मुक्तिनाथ क्षेत्र में पावन गंडकी नदी में होती है । पत्थर के अन्दर स्वयं ब्रह्मा कीट का रुप धारण करके अन्दर से ही चक्रका निर्माण करते हैं । उन पत्थरों को तोड़ाजाय तो उसी में से शालिग्राम की शिला निकलती है । उसमें प्राकृतिक रुप से धातुमिनरल विपुल मात्रा में निकलती है । दामोदर कुंड से जल में बहते हुये मुक्तिनाथ तक प्रवाह में यह शिला मिलती है।

शालिग्रामकी मूर्ति पूजा में एक संख्या में रखनी चाहिये १, ३, ५, ७, ९ । जहाँ पर शालिंगराम स्वरुप विद्यमान रहता है वहाँ मुक्ति-भुक्ति का अखंडवास होता है । इसके साथ सभीतीर्थ तथा देवों का भी वास रहता है । व्रत, जप, तप, अनुष्ठान, पूजा, दान, प्रतिष्ठा, यज्ञ, श्राद्धादि कर्मो में शालिग्राम का सानिध्य विशेष फलकारक होता है । शालिग्राम की नित्य पूजा करते समय, पवित्रपात्र में रखकर पुरुष सूक्त का पाठ करते हुये पंचामृत से या शुद्धजल से अभिषेक करना चाहिये । बाद में शुद्ध वस्त्र से पोछना चाहिये । चंदनचर्चित करके तुलसीदल चढाकर सिंहासन पर विराजमान करना चाहिये, बाद में षोडशोपचार पूजन करना चाहिये । शालिग्राम को कभी अपूजित नहीं रखना चाहिये । रात्रि में शयन के समय तुलसीदल हटादेना चाहिये । तुलसीदल के विना भगवान नैवेद्य स्वीकार नहीं करते ।

ऐसा भगवानने वृन्दा को आशीर्वाद दिया है। भगवान शालिग्राम के अभिषेक का जल अत्यंत पुण्यप्रद, कल्याणकारी, एवं सभी पापो का नाश करने वाला है। सभी रोगो को मूल से नष्ट करने वाला है। ''अकाल मृत्यु हरणं सर्वव्याधिविनाशनम्'' इस मंत्र को बोलकर श्रद्धापूर्वक चरणोदक ग्रहण करके आचमन करना चाहिये। तुलसीदल चंदन विना ग्रहण किया जाय तो दोष कारक होता है। तुलसीदल की विधितथा महिमा अगले अंक में लिखी जायेगी। विशेष शालिग्राम के स्वरुप को साकार या निराकार मत वाले दोनो ही श्रद्धा पूर्वक पूजते हैं। उस में भी वैष्णवी पूजा विधिमें सर्वमान्य शालिग्राम स्वरुप है। शाली अर्थात् देवों का समूह (स्थान) ग' अर्थात् प्रगट राम ऐसा अर्थ हुआ।

''शालिग्रामशिलायां तु त्रैलोक्यं सचराचरम्।
मया सह महासेन लीनं तिष्ठति सर्वदा॥
(रत्नाकर संहिता)

शालिग्राम के स्वरुप में चराचर तीनो लोक के साथ भगवान लीन रहते हैं। अपने इष्ट देव भगवान श्री सहजानंद स्वामीके पिता धर्मदेव परंपरा से पूजित शालिंग राम स्वरुप की पूजा षोडशोपचार विधिसे नित्य करते। पिता के देहोत्सर्ग के बाद श्री घनश्याम महाराज उस स्वरुप की पूजा नित्य करते। वही स्वरुप वन विचरण के समय बटुवा में रखकर वनविचरण करते रहे। लेकिन प्रातः पूजन तो उन्हीं का करते। सरयूनदी के प्रवाह में भी पुजा पुस्तक साथ में रखे अन्य प्रवाहित हो गया।

वनविचरण के समय दक्षिणभातर के भूतपुरी क्षेत्र के अरण्य में चार दिन तक निर्जल उपवास होने के कारण मूर्छा की स्थिति हो गयी थी, लेकिन संनिकट में कूंआ दिखाई दिया उसमें से जल लेकर शालिग्राम का अभिषेक करके तीन कमंडलु पानी पी गये। बुभुक्षा से पीड़ित भी थे, इसलिये शिवपार्वती उन्हें सतुआ लाकर देते हैं। जिसे शालिग्राम का नैवेद्य लगाकर प्रसाद लेते हैं।

श्रीहरिने सत्संग में मनुष्यदेह पर्यन्त उसी स्वरुप की पूजा करते रहे। बाद में देश विभाग करके दो गद्दी बनाकर उत्तर देश के आचार्यपद पर अयोध्याप्रसादजी को प्रतिष्ठित किया। उत्तर देश के (श्री नरनारायणदेव देश) विभाग में भौगोलिक स्थिति को देखते हुये आर्थिक श्रोत कम था - जिससे उदासीनता रहती थी। इस उदासीनता को दूर करने के लिये श्रीहरिने अयोध्याप्रसादजी को शालिग्राम की शिला प्रदान की। जिसके फल स्वरुप सर्वविधमंगल होने लगा। आज भी वही शालिग्राम की मूर्ति है जिसे देश-विदेश जब भी जहाँ भी महाराजश्री जाते हैं साथ लेकर जाते हैं। उनकी पूजा के बाद चरणोदक लेकर आगे का कार्यारम्भ करते हैं। यही आचार्य की परम्परा में है। शालिग्राम स्वरुप के अनेको चमत्कार देखने में मिले हैं। हमें भी उस चमत्कार का दर्शन हुआ है। जिस रोग की कोई दवा न हो उसे शालिग्राम के चरणोदक को पिलाया जाय तो सद्यः फलकारक हो जाता है। विदेशो में अभिषेक के जल को लेने के लिये प्रातः से भीड़ लग जाती है। पाप-ताप-रोग-शोक-मोह-दारिद्र इत्यादि को दूर करने वाला यह चरणामृत है। एक तो यह शालिग्राम स्वरुप दूसरे भगवानने स्वयं ३८ वर्ष तक लगातार पूजन किया था, फिर इसके चमत्कार की क्या बात करना। शेष क्या रह जाता है। बडे भाग्यशाली को ही यह दर्शन सुलभ है।

कितने ऋषियों के मतानुसार स्त्रियों को शालिग्राम की पूजा नहीं करनी चाहिये। स्त्रियों को तुलसी की पूजा में शालिग्राम की पूजा का फल बताया गया है। अपने व्रत-उत्सव में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक तुलसी विवाह का उत्सव धूमधाम से प्रतिवर्ष मनाया जाता है। तुलसी विवाह का उत्सव कराने वाले को तथा दर्शन करने वाले को तुलसी (विन्दा) की तरह भगवान में भक्ति का अनुराग होता है।

अभाव-अवगुण

- साधु घनश्यामप्रकाशदास (माणसा)

एक राही मार्ग में चलते हुये थककर अंबावाड़ी में आम वृक्ष के नीचे आकर विश्राम करने लगा । सुन्दर शीतल-ठन्ढी हवा चल रही थी, कोयल मधुर कूक कर रही थी, इस मधुर वातावरण में अपनी थकान दूर करने लगा । इतने में उसी आम्रवृक्ष के नीचे पका आम्रफल गिरा दिखाई दिया उसे खाकर अपनी भूख भी शान्त कर लिया । यह एक रुपक है । राह पर चलने वाला तो सच्चे अर्थ में मुमुक्षु जीवात्मा है । जन्म-जन्मान्तर से बड़ी मंजिल काटते हुये अब थक चुका है । अब उसे आम्र के बगीचे के सामने सुंदर सत्संग मिल गया है । सुगन्धवायु तथा कोयल की मधुर आवाजतो संतो भक्तों की भजन-कीर्तन, अमृतवचन है जिसे सुनकर वह जीव प्रभु में आत्मसात करता जा रहा है । सुन्दर केसर के आम की तरह भगवान का साक्षात् सुख मिलते ही अब उसकी भूख मिटती दिखाई दे रही है और अक्षरधाम की तरफ प्रस्थान करने में समर्थ हो चुका है । लेकिन उस आम वृक्ष के अगल बगल, नीचे देखता है कि यहाँ कुत्ते का मल पड़ा है और उसमें अपना मन लगाता है यह विचार भी करता है कि अगल-बगल की गन्दगी तथा कांटकूश इत्यादि में रहने की अपेक्षा अन्यत्र जहाँ साफ सुथरी जगह है वहाँ चला जाऊँ । फिर मन में आता है कि इस आम के बगीचे में केसर का आम तथा सुगन्धमलय एवं कोयल की कूक का जो आनन्द मिल रहा है, सायद अन्यत्र नहीं मिलेगा । इसलिये यहीं पर कुत्ते के मलको साफ करके तथा झाणझंखार में पड़ा रहना ही श्रेयष्कर है ।

इसी तरह हे भक्तों ! यह सत्संग जन्म-जन्मान्तर के पुण्य से मिला है । इसलिये आम वृक्ष के नीचे केवल मल देखकर वहाँ से निकल जाने की जरुरत नहीं है बल्कि उसमें समाजाने की जरुरत है । स्वभाव में परिवर्तन लाने की जरुरत है । एकता में ही आनंद है और उसी में सुख है । थोड़ा बहुत तो सर्वत्र गन्दगी होती है, उस गंदगी को साफ

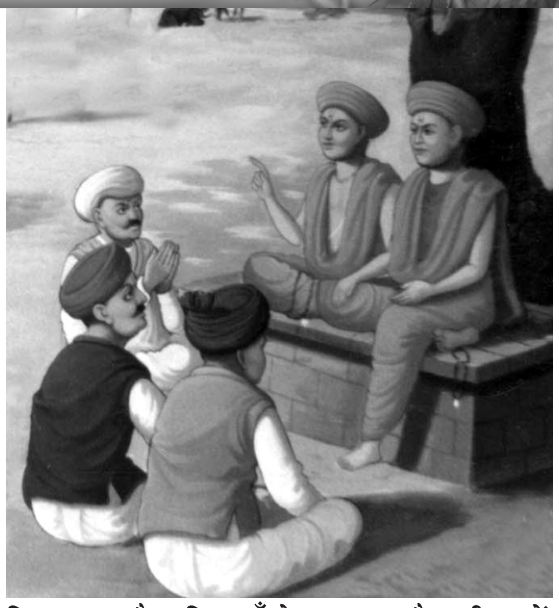

किया जाता है न कि वहाँ से हटा जाता है । जीवन में सुगन्धलेना है - सुमधुर आवाज सुननी है सुन्दर फल का रस लेना है तो अवगुण या अभाव की तरफ मन नहीं करना चाहिये ।

सत्संग रुपी बोरे में अलग-अलग नोकीले पत्थर को महाराज ने भर दिया है । लेकिन उसे एक साथ रखने का कारण यह था कि एक साथ रहकर धिसपिटकर धीरे-धीरे गोलमटोल सुन्दर शालीग्राम का रुप होजायेगा ।

इसलिये भक्तजन ! आप लोगों को यह ख्याल आया होगा कि जब यह नियम स्वयं महाराजने ही बनाया है तो आप लोगों को भी यह विचार करके सिकायत का अवसर नहीं देना चाहिये । यही सत्संग है । इसी में आनंद है । प्रभु की आज्ञा में रहकर उन्हीं के बताये मार्ग पर हम सभी का जीवन हो तभी सुख शांति मिल सकती है । अन्यथा इसी जन्म में नहीं बल्कि जन्म-जन्मान्तर तक भटकना ही रहेगा । अपने मन में दृढता की आवश्यकता है ।

इस सत्संग में जो विवेकी है वे अपने में ही अवगुण देखते हैं. लेकिन भगवान के भक्त में अवगुण नहीं देखते । सन्तो के कठोर वचन को हितकर मानते हैं, अपने में

दु:ख नहीं लगाते।(.प्र.५६)

जिसके हृदय में भगवान की भक्ति है उनके विचार इस तरह होते हैं। भगवान की जो आज्ञा है तथा संत जो कहते हैं वही हमें कहना है। इतना हमसे किया जायेगा, इतना नहीं किया जायेगा। ऐसी वाणी तो उसके मुख से कभी नही निकलती।(ग.प्र. १६)

जो सत्संग में से अलग होना चाहते हैं उनके भी तर असद भावना की वृद्धि होने लगती है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में सत्संगी मात्र के भीतर अवगुण दिखाई देने लगता है। वह अपने को सबसे अधिक समझदार मानने लगता है। रातदिन गलत विचार आते हैं जिससे वह सुखी नहीं हो पाता। जब रात्रि में सोता है तो निद्रा नहीं आती और क्रोधतो सदा उसके पास ही रहती है। ऐसा जिस में दिखाई दे उसे यह समझलेना चाहिये कि वह सत्संग से गिरने वाला है, अब उसका पतन होगा।(ग.प्र. २८)

जीव का स्वभाव है कि जिस में उसे अच्छा लगता है वही करता है। लेकिन मान के विना भगवान की भक्ति भी नहीं करता। जिस तरह कुत्ता हड्डी को एकांत में लेजाकर चबाता है। इससे उसका मुंख छोला जाता है और मुख लहूलुहान हो जाता है। उसी को चाट-चाट कर प्रसन्न होता है। लेकिन उस मूर्ख को यह पता नहीं कि जिसे चाटकर सुखी हो रहा है वह उसीके मुख का खून है। इसी तरह भगवान का भक्त होकर भी कुत्ते के हड्डी की तरह मान को छोड़ता नहीं है।(ग.प्र. ४१)

भगवान या भगवान के भक्त में दोष देखने वाला सत्संगी कहा जाने वाला पागल कुत्ते की तरह है। पागल कुत्ते की लार जिसे लगती है वह भी पागल कुत्ते की तरह हो जाता है। इसी तरह जिसमें भगवान का भगवान के भक्त या अवगुण आया हो उस व्यक्ति को सहकार करने वाला तथा उसके साथ रहने वाला भी विमुख है। जैसे किसी को छय रोग होगया हो वह कितनी भी दवा करे उसका रोग मिटता नहीं है। जिसके भीतर भगवान या भगवान के भक्त का अवगुण आया हो उसकी आसुरी वृत्ति जाती नहीं है। जिस तरह अनंत ब्रह्महत्या, अनंतबाल हत्या, अनंत स्त्री हत्या, अनंत गौ हत्या अनंत गुरुपत्नी का संग करने के बाद इस पाप से छूटने का शास्त्रों में उल्लेख मिलता है लेकिन भगवान में या भगवान के भक्त में दोष देखने वाला पाप से कभी नहीं मुक्त होता। ऐसे जीव का नाश ही होता है।(ग.प्र. १२)

जिस तरह दश-१२ साल की कन्या को क्षय रोग होने पर युवा अवस्था में मर जाती है, इसी तरह जिसने महात्म्य के विना भगवान की भक्ति की है उसकी भक्ति भी नष्ट हो जाती है।(सा. ५)

पोतानी जे प्रकृति होय तेने भगवान के साधु मरोडे ने प्रकृति प्रमाणे न चालवा दे ने प्रकृति होय तेथी बीजी रीते वर्तावे त्यारे ते जे मुंझाय नहीं ते प्रकृति मोराडे तेमां कचवाय जाय नही ने पोतानी प्रकृति गमे तेवी कठण होय तेने मुकीने जेम भगवान तथा साधु ने कहे तेमज सरल पणे वर्ते तेने गमे तेवो आपत्तकाल पडे तो पण भगवाननो आश्रय न टले। बड़ी प्रकृति मरोडे ने मुंझाय त्यारे जे पोतानो ज अवगुण ले पण भगवानने साधु नो अवगुण न ले ते सारुं। अने जो पोतानो अवगुणो न ले एनो विश्वास नहीं ने तेना आशय पण न लई शकाय।

साधुना द्रोहनुं शास्त्र मां सर्व करता अधिक पाप कह्युं छे तेनुं कारण शुं छे ? तो ए साधु साधुना हृदय ने विशे साक्षात् श्रीकृष्ण भगवान रह्या छे। माटे साधुनो द्रोह करे त्यारे भगवान नो द्रोह थाय छे। (ग.अं. ३५) जेथी पोताना देहने विशे आत्मबुद्धिनी दृढ प्रीति रही छे तेवीज भगवान तथा भगवानना भक्तने आत्मबुद्धिने दृढ प्रीति रहे तो जेवी निर्विकल्प समाधिमां शांति रहे छे तेवी शांति समाधिविना पण सदाय रह्या करे। जीवन जेवी देह-देह विशे आत्म बुद्धि छे तेवी भगवान तथा भगवानना भक्तोने विशे आत्मबुद्धि होय तेने कोई रीतनुं विघ्न लागे नहीं अने गमे तेवा देशकाल आदि मुंडा आवे तेने करी ने ए भगवानने भगवानना भक्त थकी विमुख थाय नहीं (ग.अं. ११)

उपरोक्त भगवान की आज्ञा में अपने जीवन को सुदृढ बनाकर आत्मिक शिखरपर आगे बढें ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना।

दिव्यज्ञान, उद्धवगीता

- साधु देवस्वरुपदास (जयपुर)

श्रीमद् भागवत महापुराण के इग्यारहवें स्कंधमें भगवान श्रीकृष्ण ने प्रिय सखा उद्धवजी को उपदेश दिया उसी को उद्धवगीता कहा जाता है।

प्रिय उद्धव ! बंधन तथा मुक्ति इस दुनिया में कुछ भी नहीं है। कारण यह कि सभी मायाका कार्य है। शोक, मोह, सुख दु:ख यह सभी माया का कार्य है। माया के लिये यह बात मिथ्या है। विद्या तथा अविद्या ये दोनों मेरी शक्ति हैं। जो मनुष्य या प्राणीमात्र के लिये बन्धन या मोक्ष का कारण है। ये दोनो अनादि है और मेरी माया से निर्मित है। यह शरीर प्रारब्धके अधीन मिलता है। इन्द्रियो द्वारा कर्म किया जाता है, इन सभी का प्रेरक मन है। इस तरह मन तथा इन्द्रियां ये दोनो गुण के कार्य हैं। वास्तव में गुण-गुण में व्यवहार करता है। परंतु सामान्य व्यक्ति मैं करता हूँ ऐसा मानता है। इसी कारण वह बन्धन में फंस जाता है। जो राग-द्वेष से रहित है सभी में समान दृष्टि रखता है वही मुक्त है। मैं सभी प्राणियों में अव्यक्त रुप से रहता हूँ। सभी प्राणियों में चलने की शक्ति, बोलने की शक्ति, मलत्याग की शक्ति, पकड़ने की शक्ति, आनंद उपभोग की शक्ति में ही हूँ। स्पर्श-दर्शन की, स्वाद की, सुनने की, सूंघने की शक्ति भी मैं ही हूं। समस्त इन्द्रियों में इन्द्रिय शक्ति में ही हूँ। पृथ्वी, वायु, आकाश, तेज, जल, अहंकार, महत्तत्व, पंच महाभूत, जीव-अव्यक्त-प्रकृति, सत्व, रज, तम ये सभी विकार तथा इनसे परे ब्रह्म भी मैं ही हूँ। इन सभी तत्त्वों की गणना लक्षणों द्वारा उनका ज्ञान तथा तत्वज्ञान द्वारा उसका फल भी मैं ही हूँ। मैं ही ईश्वर हूँ। मैं ही जीव हूँ मैं ही गुण हूँ। मैं ही गुणी भी हूँ। मैं ही सभी की आत्मा हूँ। मैं ही सभी का रुप हूँ। मेरे सिवाय कोई पदार्थ नहीं है। ऐसा समझना चाहिये कि जिसमें भी तेज, श्री, कीर्ति, ऐश्वर्य, लज्जा, त्याग, सौन्दर्य, सौभाग्य, पराक्रम, तितिक्षा तथा विज्ञान इत्यादि श्रेष्ठ गुण हैं वह सभी मेरा ही अंश है। यह मनुष्य शरीर अत्यंत दुर्लभ है। स्वर्ग के देवता तथा नरक के जीव भी यह मानव शरीर प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। ज्ञान मार्ग या भक्तिमार्ग के साधन भी मनुष्य शरीर की इच्छा रखते हैं। इसलिये कि स्वर्ग या नरक में भगवत् प्राप्ति नहीं होती। यह मनुष्य शरीर से ही सम्भव है। विवेकी पुरुष को इस लोक की या स्वर्ग लोक की भी इच्छा नहीं रखनी चाहिये। हम पुन: मनुष्य शरीर प्राप्त करें इसकी भी ईच्छा नहीं रखनी चाहिये। कारण यह कि कोई भी देहासक्ति रखने से मनुष्य प्रमादी बनता है। इससे उसका पतन होता है। हे उद्धव ! यह बाहर दिखाई देने वाला जगत मन का एक विश्वास है। एक भ्रम है। कारण यह कि जो कुछ दिखाई देता है वह सभी नाशवन्त है। चंचल है। बदलने के स्वभाव वाला है। यह संसार चक्र इतने वेग से गतिवान है कि इस संसार को चलाने वाले परमात्मा को जान नहीं सकता। उसकी माया ही अलग-अलग रुपों में दिखाई देती है। विज्ञान स्वरुप एक ही आत्मा अनेक स्वरुपों में भासित होता है। इसलिये जो भेद या विविधता दिखाई देती है वह सभी माया ही है। मन का स्वभाव है कि वह अलग-अलग स्वरुपों या विषयो का चितन करना। जब नया विषय मिल जाता है तो पीछे का भूल जाता है। नये विषय में अपने मन को लगादेता है। इस तरह पूर्व के विषयों की विस्मृति होती जाती है। जीव को नये नये विषयों में आसक्ति होती जाती है। इसी लिये उसे हर्ष तथा तृष्णा उत्पन्न होती है। उस समय उसे पूर्व के शरीर का स्मरण नहीं रहता। बस, यही मृत्यु है। इस तरह इस

शरीर का नाश होता है। जीव का नाश नहीं होता। परंतु मनुष्य ऐसा मानता है कि मैं ही यह शरीर हूँ। जब नूतन शरीर मिलता है तब उसे जन्म कहा जाता है। पहले की शरीर भुलाजाने से जीव ऐसा मान लेता है कि मैं पहले नहीं था। अभी हम पैदा हुये हैं। वह पुराने शरीर को एकदम भूलजाता है। हे उद्धव ! काल की गति इतनी सूक्ष्म होती है कि उसे देखपाना बड़ा कठिन है। इसी से प्रतिक्षण शरीर की उत्पत्ति एवं विनाश होता रहता है। सूक्ष्म होने के कारण प्रतिक्षण होने वाले जन्म-मृत्यु को देख नहीं पाता है। जिस तरह काल के प्रभाव से दीपक प्रकाश, नदीप्रवाह तथा वृक्ष का पता-फल क्षण-प्रतिक्षण बदलता रहता है, इसी तरह प्रत्येक प्राणियों के शरीर की स्थिति भी बदलती रहती है। पिता को पुत्र के जन्म से तथा पुत्र को पिता की मृत्यु से अनुमान करलेना चाहिये। जन्म या मृत्यु से परे है। शरीर के जन्म को तथा मृत्यु को देखने वाला शरीर से भिन्न है। वही आत्मा है। उसका जन्म या मृत्यु नहीं होती। जिस तरह रोग का सही इलाज न करने से रोग मूलसे निलकता नहीं। वह वारंवार परेशान करता है। उसी तरह जिसके मनकी वासना तथा कर्म का संस्कार नष्ट नहीं हुआ, जो स्त्री पुत्रादिक में आसक्त है उसे वासना परेशान करती रहती हैं। जीव संस्कारो से प्रेरित होकर जन्म से मृत्यु तक कर्म में ही जुडा रहता है। और हर्ष-विषाद के भंवर में फसा रहता है। परंतु जिस तत्व को वह जान लेता है उसी के संस्कार के अनुसार कर्मफल भोगते हुये भी हर्ष-शोक इत्यादि विकारो से पर होता है। हे उद्धव ! अपने हित की चाहना वाले व्यक्ति को भोगविलास से दूर रहना चाहिये। विषय तथा इन्द्रिय के संयोग से मन में विकार पैदा होता है। अन्यथा विकार का कोई अवसर ही नहीं हैा। जो वस्तु कभी देखे या सुने नहीं है उसके लिये मन में विकार होता ही नहीं। जो लोग इन विषयों में से अपने चित्त को हटालेते है। उनका मन स्वयं शांत होजाता है। बड़े-बड़े विद्वानों के लिये भी स्वयं की इन्द्रियां तथा मन विश्वास पात्र नहीं हैं। इससे खूब विश्वासपूर्वक व्यवहार करना चाहिये। इस संसार में मनुष्य को कोई दूसरा सुख-दुःख नहीं देता, वह उसके चित्त का एक भ्रम है। यह सम्पूर्ण संसार तथा उसके भीतर का मित्र-शत्रु भेद केवल अज्ञान के कारण होता है। इसीलिये हे उद्धव ? जो अपने चित्त को मुझमें लगा देता है और चित्त को अपने वश में करलेता है उसे कोई भेद रहता नहीं है। सभी योग साधनाओं का सार यही है। मन सबसे बलवान है। जो मनुष्य मन पर काबू पा लेता है वह देवों का भी देव है। मन सबसे बड़ा शत्रु है। इसका आक्रमण असह्य होता है। वह बाहर की शरीर को ही नहीं बल्कि हृदयादि मर्मस्थान को भी वेधता है। उसे जीतना बड़ा कठिन है। मनुष्य को सर्वप्रथम मन पर विजय प्राप्त करना चाहिये। परंतु होता ऐसा है कि मूर्ख लोग मन को जीतने की अपेक्षा दूसरों के साथ झगड़ा करने में लगे रहते हैं। इतना ही नहीं जगत के लोगों को ही हित-शत्रु बनालेते हैं। साधरण रीति से मनुष्य की बुद्धि कुंठित होगयी है। इसलिये मैं और मेरा अपना समझ बैठे हैं। इससे वह भ्रम में फस जाता है। अज्ञान रुपी अंधकार में भटकने लगता है। हे उद्धव ! जो वस्तु अच्छी लगती है उसी में जीव आसक्त हो जाता है। उसे प्राप्त करने के लिये प्रयत्न शील होजाता है। जब विघ्न आता है तो शुभाशुभ का निर्णय नहीं करपाता और दलदल में फस जाता है। हे उद्धव ! जिसके चित्त में असंतोष है वही सबसे गरीब है। जो अनंत इच्छाओं वाला है वही असमर्थ है - लाचार है। सच्चा धनवान तो वह है जिसके पास अच्छे गुणो का खजाना है।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

लिखावित पांडे श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज जत सद्गुरु श्री ब्रह्मानंद स्वामी आदि अधिकारी समस्त नारायण वांचशो । बीजुं लखवा कारणसमज जे स्वामी श्री सहजानंदजी महाराजनी आपणने आज्ञा छे जे आपणे कोई नुं करज न करवुं तथा थापण न राखवी । तथा पोताना सेवक सत्संगी बाई भाई होय तेमने व्याजे रुपैया न देवा अने महोबत ने पेटे जो देवा पड़े तो उचीना करी ने देवा पण पाछी तेनी पासे उधराणी न करवी ।

ते पोताने जाणे आवे तारे लेवा, ने कुसंगी ने व्याजे रुपैया न देवा अने बीजु जे वरत्यानी रीत ते तो शिक्षापत्री में महाराजे लखी छे - ते प्रमाणे वर्तवुं ।

अने आ लख्या प्रमाणे श्रीजी महाराजनी जे आज्ञा नही माने ते आरो सेवक नहीं ने ते वचन द्रोही ने गुरु द्रोही छे ।

॥ संवत १८८५ ना पोष सुदी १२ ॥

भगवान श्री स्वामिनारायण धाम मे पधारे उससे करीब १ वर्ष पूर्व आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराज द्वारा लिखाया गया यह पत्र है ।

श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री में भक्तिमार्ग के साथ व्यवहार की शुद्धि को भी श्रीजी प्राधान्य दिया है । श्रीजी आश्रित कोई भी भक्त-अन्न-वस्त्र से दुःखी नहीं होगा ऐसा श्रीहरि का वचन है ।

व्यवहार मार्ग में देवऋण नहीं करना चाहिये, यह उत्तम सिद्धान्त हैं । हरिभक्तों के साथ आत्मबुद्धि रखना कदाचित उन्हे धन देने का प्रसंग आवे तो वापस लेने का विचार नहीं रखना । श्रीजी महाराज ने उसे प्रेरणा करेंगें और वह स्वयं योग्य समय देजायेगे, ऐसी उत्तम समझ रखनी चाहिये । अंग्रेजी में कहावत है कि धन के विष यमें लेन-देन करके यह लोक तथा परलोक न विगड़े इसका ध्यान रखना चाहिये ।

इस प्रकार की व्यावहारिक शुद्दि रखेंगे तो जीवन में कहीं भी या भजन में कभी भी अडचन नहीं आयेगी । यह पत्र हरिभक्तों के दर्शनार्थ श्री स्वामिनारायण म्युजियम के होल नं. ९ वें रखा गया है । सभी हरिभक्त इस पत्र का अवश्य दर्शन करें, साथ ही महाराज की आज्ञा का पालन करें । - हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए ।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे निर्वाह हेतु दान देने वालों की नामावली अगस्त-२०१२

- ५१,०००/- ठक्कर स्नेह एम. अमदावाद
- २५,०००/- मिस्त्री चांदनी विजयभाई, घाटलोडिया
- २१,०००/- ठक्कर अशोक मूलजीभाई, अमदावाद
- १५,०००/- सुधीरकुमार परसोत्तमभाई पटेल, हर्षद कोलोनी
- ११,०००/- पटेल विनुभाई अमथालाल, वेडा
- १०,०००/- पुनमभाई मगनभाई पटेल, अहमदाबाद
- ६,१५०/- कमाभाई दामाभाई, कालियाणा
- ५,०००/- अरविंदभाई त्रिकमदास पटेल, करजीसण
- ५,०००/- घनश्याम ट्रेडर्स, साधली वती लक्ष्मणभाई पटेल
- ५,०००/- हिरेनभाई प्रागजीभाई पटेल, बापूनगर
- ५,०००/- मुकेशचंद्र रामचंद्र पटेल, घाडलोडीया

५,०००/- डी.एम. शुक्ल, अमदावाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावली (अगस्त-२०१२)

ता. ३	श्री विरजी कानजी राधवाणी तथा सुरेश प्रेमजी हिराणी, बलदिया (कच्छ)	ता. २३	श्री स्वा. म. वावोल सां.यो. सुरजबा
ता. ५	पटेल हर्षदकुमार चंदुलाल, ओस्ट्रेलिया	ता. २४	श्री स्वा. सत्संग समाज, कडी हरजीवनभाई (धरमपुवाला)
ता. १२	दिनेशभाई डी. सावलिया, नवानरोडा	ता. २५	श्री न.ना.देव महिला मंडल - नारणपुरा वती महंत हरिॐ स्वामी
ता. १५	हरजीवनदास करशनदास पटेल (धरमपुरवाला), अमदावाद	ता. २६.	श्री न.ना.देव महिला मंडल - राणीप वती शारदाबहन - कैलाशबहन
ता. १९	श्री स्वा.ना. मंदिर बहनो का दरबारगढ मोरबी, वती राजकुंवरबा, उषाबा	ता. २८.	श्री न.ना.देव महिला मंडल - नवा वाडज, कान्ताबहन पटेल
ता. १९	श्री स्वा.ना. सत्संग समाज (बहनोका) नारणपुरा वती महंत हरिॐ स्वामी	ता. ३१	श्री न.ना.देव महिला मंडल - बापूनगर

श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्यों को सूचना

श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्यों को ज्ञातव्य हो कि नाम में फेरफार हो गया हो या पता बदल गया हो, अंक समय से न मिलने पर अपना लाईफ मेम्बर नं., ग्राहक नं., वार्षिक सभ्य के लिये ग्राहक नं. अवश्य भेंजे। ग्राहक नं. के विना पत्ता नहीं बदला जायेगा और फरीयाद भी मान्य नहीं होगी। इसलिये अपना ग्राहक नं. याद रखना आवश्यक है। यदि पिनकोड नं. गलत हो तो सुधारकर प्रेषित करें।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी नारायणघाट की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल माणसा के प.भ. रमेशभाई कचराभाई पटेल की तरफ से श्री स्वामिनारायण मासिक के कुल ६० सदस्य बने हैं - खूब खूब धन्यवाद।

सत्संगबालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

माफी मांगो सुखी बनो

(शा. हरिप्रियदास - गांधीनगर)

कितनी सुदंर वर्षा ऋतु चल रही है। सभी ऋतुओ में वर्षा ऋतु को सात्विक माना जाता है । इसी लिए इस ऋतु में नियम लेने की वात चलती है। इसी संदर्भ में नियम से क्या लाभ है इस पर चर्चा करेंगे ।

सौराष्ट्र में छोटे-छोटे पर्वतों के बीच में, तीन चार झरनाओं से घिरा हुआ एक छोटासा धरमपुर नामक गाँव है। बड़े शहरों से दूर, कुदरतकी गोंद में बसा होने से चाक चिक्य यहाँ तक प्रवेश नहीं कर सका है । गाँव के लोग भावुक, श्रद्धालु, निर्मलमन वाले हैं।

इस धरमपुर के गाँव में कुशलचंद को शेठ के रुप में जाना जाता था । गाँव में उनकी बोलबाला थी, तीन-चार दुकाने थीं । सोने का अच्छा कारोबार था । उन्हीं के यहाँ से सभी गाँव वासी जीवन जरुरी की सामान खरीदते थे । उनका व्यापार खूब बढा । अपने यहाँ एक मुनीम को नौकरी में रखलिये । जब शेठजी गाँव से बाहर जाते तब मुनीम ही सारा कारोबार सम्हालते शेठ को भी मुनीम की वफादारी का ख्याल आ गया था । इसलिये पैसे का हिसाब किताब भी उन्हीं को सौप देते ।

शेठ के बंगला के बगल में ही मंदिर था । ऐसे वर्षा ऋतु के समय में कुछ लोगों ने ऐसा नियम लेने को सोचा कि जिससे हमें भी फायदा हो और अन्य को भी फायदा हो । ऐसा विचार कर सभी मंदिर में ४ से ६ बजे तक भजन-कीर्तन करते और अन्त में सभी को प्रसाद वितरण करते ।

बंगले के बगल में मंदिर होने से तथा दोपहर के समय व्यापार कुछ कम होने से मुनीम को भजन कीर्तन सुनने में आनंद आता, ध्यान पूर्वक सुनते । बाद में निश्चित किये कि आजतक मैने कोई पूजापाठ नहीं किया अब हमभी करेंगे । यदि इस भजन मंडली में सामिल हो जाउँतो प्रभु की भक्ति होगी और मेरा कल्याण होजायेगा ।

दूसरे दिन मुनीम इस मंडली के आगेवान भक्त ध्यान चंद को मिले और साथ में भजन मंडली में जुड़ने की बात की । उन्हों ने कहाँ दिया और वे भजन में जुड़ गये । धीरे-धीरे सभी भजन याद होगयी । इस तरह दो-तीन मास तक भजन में जाने से भक्तिमार्ग में आनंद आने लगा । लेकिन अन्य भक्तों की तरह तल्लीनता नहीं आती थी । दूसरे दिन अन्य भक्तों से मिलकर अपनी बात कहे - कि आप लोगों की तरह हमें तल्लीनता नहीं आती है, इसके लिये हम क्या करें ? तब ध्यानचंद ने कहा कि आपके हृदय में अभीभी पाप छुपा बैठा है । इसलिये आप उस स्थिति तक नहीं पहुंच पा रहे हैं । मुनीम निर्मल भाव से कह दिया कि जब शेठजी नहीं थे उस समय मैने ५००० पांच हजार रुपये चोरी किये थे । अब मेरी भूल का एहसास हो गया है । और वह रुपये हमें रखदेना चाहिये ।

मुनीमने विचार किया की मेरी चोरी का पता शेठ को नहीं है । इसलिये तिजोरी में बिना बताये रुपये रख देता हूँ, ऐसा ही किया । अब भजन में गये तो दिल हल्का महशूस हुआ और भजन में थोड़ा मन भी लगने लगा । फिर भी सच्चा आनंद नहीं मिलता था । यह बात ध्यानचंद को बताई ध्यान चंद्र ने समझाया कि मुनीमजी ! शेठ के विना जानकारी से आपने पैसे निकाले और बिना बताये रख दिये । लेकिन भगवान की जानकारी में तो आप गुनहगार तो हैं ही । जब तक आप अपने किये को शेठ से नहीं बतायेंगे तब तक आप दोष के भागी है । मुनीमजीने कहा मैं शेठजीसे कहूं तो वे नौकरी से निकाल देंगे । पुनः कोई नौकरी पर नहीं रखेगा ? गाँव में बदनामी होगी । ध्यानचंदने कहा कि 'हरि नो मार्ग छे सूरानो' सत्य बलोने में थोड़ा कष्ट होगा, लेकिन सत्य तो बोलना ही पड़ेगा । आप स्वंय न बोल सकें तो हम साथ में चले ।

दूसरे दिन दोनो भक्त शेठ के पास पहुँचे । शेठ ने प्रेम से सभी का आदर सत्कार किया । कुशलक्षेम पूछने के बाद आनेका कारण पूछा । ध्यानचंदने मुनीम की सम्पूर्ण बात बता दिया और यह भी कहा कि अपनी भूल की माफी मागने आये है । बड़े दुःखी हैं । पश्चाताप की आग में जल रहे हैं हमारे सत्संग में आते हैं । परिवर्तन आया है । अब आपजो भी योग्य हो करिये ।

शेठ अपने आसन से उठकर मुनीम के पास गये और क्षमा करके उन्हें अपने गले लगा लिये । इतना हि नहीं उनकी पगार (वेतन) भी बढा दिये । कोई कार्य न करने योग्य हो गया हो तो हृदय में पश्चाताप तो होना ही चाहिये । किसी कविने लिखा है -

''हा, पस्तावो विपुल झरणुं, स्वर्ग थी उतर्युं छे ।
पापी तेमा डुबकी मारी, पुण्यशाली बने छे ।''

पश्चात्ताप होने पर पापी भी पुण्य शाली बनजाता है । प्रियभक्तों ! भगवान स्वामिनारायणने गढडा मध्य के इकतालिस वें वचनामृत में कहे हैं कि ''जेनो द्रोह कर्यो होय एनी पासे मांफी मांगवी अने फरीथी भूल न थाय एवो

खटको राखवो''। तो इस मुनीम से यदि पाप से मुक्त हुआ जा सकता है, आनंद से रहा जा सकता है आध्यात्ममार्ग पर चलाजासकता है तो अन्य लोगों से भी ऐसा किया जाय तो उसके जीवन में भी ऐसा होना सम्भव है। ऐसा करने वाला व्यक्ति सदा आगे बढता ही रहता है। इसलिये आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजने भी लिखा है-

''एक कपटी न तरे रे महाराज,
शरण आये सबही तरे।''

●

महापुरुषों का श्राप आशीर्वाद हो जाता है

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

बद्रिकाश्रममें श्री नरनारायणदेव विराजते हैं। श्री नरनारायणदेव ब्रह्मचर्य की महिमा को बढाने के लिये ऋषि के रुप में रहकर बदरीवृक्ष के नीचे बैठकर भक्तों को सुखी करने के लिये तप करते हैं।

एक समय हजारो ऋषि-मुनि भारत भर की तीर्थयात्रा करने जाते हैं। अडसठ तीर्थ, सातपुरी, चारधाम, इन सभी जगहों पर विचरण करते हैं। विचरण करते समय तीर्थस्थान में होने वाले अधर्म-पाप, अपवित्रता इन सभी को देखकर दुःखी होते हैं। साधु पुरष इन सम्पत्ति की अपेक्षा नहीं रखते। मान-अपमान की भी अपेक्षा नहीं रखती। साधु पुरुष तो अधर्म, पाप, भ्रष्चाचार देखकर दुःखी होते हैं।

भारत भर में तीर्थ यात्रा करने वाले हजारो ऋषियों ने जो अधर्माचरण, पापाचरण, भ्रष्टाचार इत्यादि देखने के बाद बद्रिकाश्रम में श्री नरनारायणदेव भगवान के पास गये। आप वीती सभी वातें कह सुनाई। उसी समय कैलास पर्वत से दुर्वासा ऋषि भी श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ आते हैं। दुर्वासाऋषि उग्र स्वभाववाले थे। कोई भूल करे तो तुरंत क्रोधमें आजाते।

सभा में आकर अपने संमान की अपेक्षा के साथ खड़े रहे। परंतु धर्मरक्षा के चिन्तन में ऋषि मुनियों को ख्याल नहीं रहा कि दुर्वासा ऋषि आये हुये हैं।

लेकिन ईश्वर की इच्छा से ही यह होना सम्भव था कि श्री नरनारायणदेव की इच्छा से ही दुर्वासा की तरफ किसी की दृष्टि नहीं पड़ी। सभी का मान श्री नरनारायणदेव की तरफ आकृष्ट था।

दुर्वासा ऋषि का सन्मान न होने से अत्यन्त क्रोधित हो गये। यह एक अजब घटना कही जा सकती है। जहाँ पर हिंसक जन्तु की हिंसक वृत्ति नष्ट हो जाती है। जहाँ पर स्वयं परमात्मा विराजमान हों वहाँ पर अन्तः शत्रु स्वयं नष्ट हो जाते हैं। वहाँ पर दुर्वासा को क्रोधकैसे आया। क्रोधित होकर दुर्वासा ऋषिने कहा, ये बैठे हुये महर्षी, विद्वान, महात्मा, तपस्वी, पंडित, व्रतनिष्ठ है, परन्तु मेरा सन्मान नहीं करते इसलिये पंडित और मूर्ख ये दोनो समान हैं। हमें लगता है कि इन सभी को तप का, त्याग का अभिमान आ गया है। ज्ञान का, विद्या का अभिमान आ गया है। अभिमान के कारण हमारे जैसे लोगों का सन्मान नहीं करते। इसलिये इनके अभिमान को तोड़ना पड़ेगा। क्रोधसे व्याकुल दुर्वासा ऋषि भरी सभा में शाप देते हैं।

यहाँ जो सभा में बैठे है वे सभी लोंग भरत खंड में जाकर जन्मधारण करें। इस कलिकाल में असुरों का भी जन्म हुआ है - उन असुरों से आप सभी दुःख प्राप्त कीजिये। दुर्वासा के श्राप से पूरी सभा स्तब्धरह गयी। कितने लोग दौड़कर दुर्वासा के चरण में जाकर गिर पड़े। क्रोधित दुर्वासाने कहा-

मारुनाम सुनी शांति नासे,
क्षमा आवे नहि मुझ पासे।

उसी समय धर्मदेव दुर्वासा के पास जाकर हाथ जोड़कर कहते है, दुर्वासाजी ? आप तो महान संत है। बड़े दयालु महात्मा है। आप का हृदय मक्खन के समान कोमल है। नम्रता भरी धर्मदेव की वाणी सुनकर थोड़ा शान्त हुये। आगे धर्मदेवने कहा कि आपका श्राप भी हम सभी के लिये अच्छा ही है। इसलिये कि ''दुर्जनो का श्राप तथा आशीर्वाद दोनो एक जैसा ही होता है। सज्जनो का श्राप तो आशीर्वाद जैसे ही होता है। आप जैसे महात्मा जो कुछ वचन उच्चारते हैं वह जगत के हित के लिये होता है।

इतने विनम्र वाक्य सुनकर दुर्वासा ऋषि एकदम शांत हो गये। दुर्वासा ऋषि कहते हैं कि धर्म ? मैने जो श्राप दिया है वह मिथ्या तो हो नहीं सकता। उसे अब सहन करना ही पड़ेगा। लेकिन श्राप के साथ एक वरदान देता हूँ।

इस सभा में विराजमान श्री नरनारायणदेव, आपके यहाँ प्रगट होंगे और असुरों से आपकी तथा इन महर्षियों की रक्षा करेंगे। इसलिये दुर्वासा ऋषि के श्राप को निमित्त मानकर स्वतंत्र मूर्ति परमात्मा अक्षरधाम के अधिपति इस पृथ्वी पर अवतार धारण किया।

इस लेख को यदि शांति से वांचे होंगे तो सभी प्रश्नो का उत्तर अपने आप मिल जायेगा। इसी वात को संक्षेप में कहे तों दुर्वासा ऋषि को उल्लाहना देने की जगह पर उन्हीं के पक्ष में थे। क्योंकि सत्पुरुषों के परिताप को सहन न करने वाले महाप्रभु दुःखी होते हैं। उनके सुख में अधिकता हो ऐसी चाहना करते हैं।

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"मात्र मन की दिशा बदलनी हैं"

(संकलन : कोटक वर्षा-नटवरलाल - घोडासर)

भगवानने खूब दया करके इस सत्संग में जन्म दिया है। सत्संग में बैठने से धीरे धीरे जगत का व्यवहार भुल जाता है। जगत के मानव कितना प्रयत्न करते हैं फिर भी जगत का व्यवहार भूलता नहीं है। जंगल में जाकर एकांत सेवन करने की कोई जरुरत नहीं है, गृहस्थ आश्रम में भी भगवान की भजन की जालकती है। कहीं भी रहिये मन में से संसार निकलना चाहिये। सच्चा त्याग मन से होता है। महाराज ने पूजा करने की आज्ञा की है। कैसे करनी चाहिये-इसकी विधिभी बताई है। कितनी देर करनी चाहिये यह नहीं बताई। इसलिये कि - कितने समय तक भगवान में चित्त रहेगा, उसके ऊपर निर्भर करता है। आधे घन्टे, एक घन्टे - जिसे जो समय मिले तथा जब तक मन स्थिर-एकाग्र होकर प्रभु में मन लग सके उतने समय तक भजन करनी चाहिये। स्थिर मन से माला फेरनी चाहिये। मन ही बन्धन तथा मुक्ति का कारण है। सुख तथा दु:ख का भी कारण है। बिल्ली अपने घरों में आती है और घर में से मूषक को लेजाती है। लेकिन हमें दु:ख नहीं होता, यदि पालित शुक को बिल्ली ले जाय तो कितना दु:ख होता है। क्योंकि पालित शुक में अपना मोह-ममता-माया रहती है। मोह ममता-माया ही हमें मार खिलाती है। जिस तरह पानी में कीचड़ होता है और पानी से साफ भी होता है। इसी तरह अपना मन पानी की तरह है। पानी को नीचे की तरफ बहाना हो तो श्रम नहीं करना पड़ता, यदि पानी को ऊपर की तरफ ले जाना हो तो कितना श्रम करना पड़ता है। यंत्र की जरुरत पड़ती है। इसी तरह मन को संसार की तरफ ले जाना हो तो मेहनत नहीं करनी पड़ती। परंतु मन परमात्मा की तरफ ले जाना हो तो बहुत मेहनत करनी पड़ती है। मंत्र की जरुरत पड़ती है। एक प्रचलित उदाहरण है - एक राजा थे, प्रसिद्ध किये कि बकरा को लेजाकर पेट भरकर घास खिलाना है। जो बकरा को भूखा नहीं रखेगा उसे इनाम दिया जायेगा। यह सुनकर सभी क्रमश: बकरा को ले जाते हैं और बकराको घास खिलाते हैं। शाम होते ही बकार को राजा के पास लाते हैं। राजा बकरा के सामने घास डलवाते हैं - बकरा घास खाता हैं। यह देखकर राजा सभी से कहते हैं कि आप लोग बकरे को पेट भरकर घास नहीं खिलाये। बकरा भूखा है। बाद में एक गरीब आदमी का नंबर आया, वह विचार करने लगा कि राजा के इस परीक्षण काल में अवश्य कुछ रहस्य है। अब गरीब आदमी भी उस बकरे को अपने घर ले आया। उसके आगे घास डालता है ज्यौं खाने जाता हैं त्यौ उसे लकड़ी से मारता है। ऐसा पूरे दिन किया। बाद में सायंकाल होते ही बकरा को लेकर राजा के पास पहुँचता है। बकरा को घास डाली गयी। लेकिन बकरा घास में मुख डाला ही नहीं, उसे डरथी कि ज्यों ही मुंखडालूंगा त्यौं लकड़ी मारी जायेगी। इसका मतलब यह कि मन को चाहे जितना संसार सबन्धी खोराक दें फिर भी मन को संतोष नहीं। मन की इच्छा बढती जायेगी। क्योंकि पांच ज्ञानेन्द्रियों का केन्द्र मन है। इस लिये मन को सजाकर रखना चाहिये। हम धन-दौलत सभी सजोकर रखते है, लेकिन मन को कोई सजोता नहीं। इस लिये मन को रोकना नहीं है बल्कि उसकी दिशा बदलने की जरुरत है। जिस तरह ताला को खोलने तथा बन्द करने के लिये एक ही चाभी की जरुरत होती है, मात्र उसकी दिशा अलग होती है। इसी तरह जगत के विषयों में से मन की आसक्ति कम करके परमात्मा की तरफ गती करने की जरुरत है। संसार का प्रत्येक पदार्थ नाशवंत है। इसलिये उसके साथ बांधा गया ममत्व दु:खदायी होता है। सृष्टि में सच्चा सुख तो परमात्मा श्रीहरि हैं उन्हीं के साथ सम्बन्धबांधने से शाश्वत सुख मिलता है। भौतिक सुख में आपसे कोई बहुत आगे हो तो उससे भी बढने की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिये। ऐसा करेंगे तो आपको दु:ख होगा और ईर्ष्या के भाव आयेंगे। आपके जीवन में दुर्गुण बढेगा। आध्यात्मिक जगत में किसी से तुलना करेगें बढने की अपेक्षा रखेंगे तो आपका जीवन सुखी होगा, आत्मिक शांति मिलेगी। यदि जगत

के पदार्थों में, विषयो में मन लगायेंगे तो आत्म शक्ति खत्म हो जायेगी । जगत के साधन, सम्पत्ति, वैभव ये सभी जीवन के साधन हैं । नही की जीतने के लिये हैं । जगत को जीतने के लिये परमात्मा की जरुरत है । इसलिये परमात्मा की तरफ बढने की जरुरत है । यद्यपि हम भगवान की अपेक्षा जगत के सारे काम को प्रधानता देते हैं । इसी से हम भवाहवी में भटकते रहते हैं । भगवान को प्रथम स्थान कोई नही देता, जगत को देता है । भगवान के पास पहुँचने के लिये क्या करना चाहिये । जैसे कही जाना हो तो अथवा जल्दी पहुंचना हो तो गाड़ी की रफ्तार को बढादेते हैं । इसी तरह अपनी गति को रास्ते में आने वाले जितने भी-काल, कर्म, माया , मोह-बन्धन इत्यादि ब्रेकर है (गति अवरोधहै) उनकी परवाह किये विना ही आगे बढते रहना चाहिये । इसी में परम शान्ति समाई हुई है तथा परमतत्वकी प्राप्ति संभव है । परमात्मा की बनाई मर्यादा में रहने से जीव की गति में वेग मिलेगा ।

●

स्वामी श्री सहजानंद

- सां.यो. कंचनबा (ध्रांगध्रा)

आप अगले अंक में पढे कि सहजानंद स्वामीने गद्दी पर बैठते ही धर्म के प्रारंभ में परिवर्तन किया । संतो को मंडल में रहने की आज्ञा किये और साथ में ही गाँव-गाँव फिरने को कहे । संतो को खूब कड़ा नियम भी दिये । आहार सम्बन्धी नियम भी कड़क रखे । किसी भी संयोग में क्षमा का त्याग नहीं करना मारखाकर भी मारने वाले को आशीर्वाद देना ।

सहजानंद स्वामी ने यह विचार किया कि - जगत के सभी जीवों का कल्याण हो ऐसा करना है । इसके लिये अन्नक्षेत्र खोले, जिससे मुमुक्षु जीव आकर्षित होकर आने लगे । लोज, मांगरोल, माणावदर, अगतराई, सरधार, धोराजी, भाडेर, नवागढ, भुज, फणेणी, सांकली, जामवाडी, माणकवाड, मेथाण, कोटडा, कारियाणी, गढडा, जेतपुर, अमदावाद, तथा जेतलपुर इत्यादि स्थलों पर सदाव्रत प्रारंभ करके अनंत जीवो को अपने साथ जोड़ने का प्रयास किये । जगह-जगह पर सदाव्रत-अन्नक्षेत्र चलाने का हेतु यही था कि अधिक मनुष्य आयें और प्रभुका सहाचर्य प्राप्त कर मोक्ष पद को प्राप्त करें ।

श्रीहरि ने जो दूर दर्शिता के साथ निर्णय किया था वह समाज के लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ । उनके लीला में भी अनके धार्मिक मर्म छिपा हुआ था । आज अपना धर्म जो उच्च शिखर पर पहुँचा है उसका यही कारण है कि प्रभु ने धर्म की ईंट स्वयं प्रारंभ में अर्थात नीव में डाले जो आज विश्व फलक पर एक महाप्रसाद का रुप ले लिया ।

श्रीहरि स्वयं दैवी विभूतियों के स्वामी थे। योग में पारंगत थे । प्रभु की अद्‌भुत शक्ति ने उन्हें परम बना दिया । उनके आंखो मेंअपार करुणा थी । उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेमसे भरा हुआ था । ऐसे विभूतिमान पुरुष का दर्शन करते ही उनके वश में होना स्वाभाविक था । आज भी वही ऐश्वर्य उन्हीं के तीनो अपर स्वरुप में दिखाई देता है ।

सहजानंद स्वामीने अपने समय में समाधिप्रकरण चलाया । चमत्कार बताने के लिये नहीं या सम्प्रदाय की तरफ खींचने के लिये नहीं बल्कि स्वस्वरुप को निश्चय करने के लिये, लोग प्रभु की भावना को पहचान सकें । जो भी तत्कालीन समय शरणागत हुये उन्हें समाधिमें श्रीहरि का साक्षात्कार हुआ । भगवान की वही मूर्ति राजारुप में है और साधु रुप में भी हैं । जो भगवान की तरफ दृष्टि करता है वह लोह चुम्बक की तरह खिंचा जाता है । उनके सन्मुख होते ही समाधिलग जाती है ।

समाधिपापियों को भी लगती है क्या ? इस प्रश्न के उत्तर में श्रीहरिने कहा कि धर्मशास्त्र के अनुसार जो आचरण नहीं करता उसे कुपात्र कहा गया है लेकिन वहीं भगवान की या भगवान के भक्त की जब शरणागति स्वीकार करता है तो उसमें सात्विक गुण आते हैं और पाप नष्ट हो जाता है । परंतु जो धर्म में रहकर भी भगवान का या भगवान के भक्त का द्रोह करता है तो उसके सारे पुण्य जलकर भस्म हो जाते हैं ।

अपने प्रभु को समझने के लिये यह जन्म पर्याप्त नहीं है । परंतु सतत मनन- चिन्तन करते रहने से श्रीहरि की सांनिध्यता मिलने में सरलता होजाती है । प्रभु के द्वारा बनाये गये नियम में रहकर वैसा ही पालन करके जीवनको मजबूत बनावें (क्रमशः)

●

श्रद्धा की सर्वोपरिता

– सां.यो. कुंदनबा गुरु कंचनबा (मेडा)

हे भक्तों ! धर्म में वृद्धि करने वाला साधन श्रद्धा है। श्रद्धा के विना व्यक्ति कभी भी धर्म की प्राप्ति नहीं कर सकता। शरीर को सुख देने से या दान-पुण्य करने से धर्म की प्राप्ति होती है ऐसा नहीं है इन सब में श्रद्धा न हो तो व्यर्थ प्रयास है। श्रद्धा माता की तरह है – जिस तरह माता बालक को रखती है। पालन-पोषण करती है। उसी तरह श्रद्धा भी धर्म का पोषण करती है। इसी तरह धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष का साधन श्रद्धा ही है।

श्रहरि श्रद्धा की वात सा.के. १८ वचनामृत में कहते हैं कि जैसे वैराग्य, विवेक-ज्ञान तथा भक्ति स्वत: प्रकट हो जाती है। काम-क्रोधादिक विकार स्वत: नष्ट भी होजाते हैं। ग.म.प्र. चौथे व. में श्रीहरिने कहा है कि ''अखंड चिंतन हो ऐसी श्रद्धा होनी चाहिये। ग.म. के १६ व. में भी श्रीहरिने कहा है कि ''जिसमें मंद श्रद्धा हो उसे कई जन्म के बाद साधन की प्राप्ति होती है। जिसमें बलवान श्रद्धा हो उसे तत्काल सिद्धि होती है। जिस तरह कोई पुरुष काशी जा रहा हो और प्रतिदिन दो पग ही आगे बढे तो वह लम्बे समय में पहुँचेगा। जो प्रतिदिन ४० कि.मी. चले तो जल्दी पहुंच जायेगा। इस में श्रद्धा ही बलवान है।

श्रद्धा हीन मनुष्य कभी मोक्ष की तरफ गति नहीं कर सकता। आध्यात्मिक क्षेत्र में आने के लिये तीन चीज की जरुरत होती है – १. प्रीति २. विश्वास, ३. श्रद्धा। प्रीति हो तो कार्य सरल हो जाता है। विश्वास हो तो काम सत्य माना जाता है। परंतु श्रद्धा न हो तो सफलता नहीं मिलती। सत्संगिजीवन के दूसरे प्रकरण के १० वें अध्याय में कहा है कि शास्त्र में बताये गये सत्कर्म को विश्वासपूर्वक किया जाना ही श्रद्धा है। विश्वास से संशय रहित हुआ जाता है और श्रद्धा से आचरण पवित्र होता है। श्रद्धा के विना माला फेरना विना प्रयोजन का है। जिस तरह किसी पशु को डोरी में बांधकर रखा जाय उससे कोई अर्थलाभ नहीं होता, उसी तरह व्यक्ति विना प्रेम-श्रद्धा के जप करता है तो पशु बन्धन के समान है। किसी व्यक्ति के पास लाखो रुपये हो लेकिन श्रद्धा न हो तो वह दान-पुण्य नहीं करता। उस धन का नाश होता है – चोर या अन्य रास्ते से। कहने का आशय यह है कि श्रद्धावान व्यक्ति कुछ भी कर सकता है।

उत्तर गुजरात में ऊझा नामक एक गाँव है। वहाँ पर उदेकुंवर नाम की एक सत्संगीबहन रहती थी। उसके घर श्रीहरि दिव्य रुप में पधारे। उस समय बहन रसोई बना रही थी। इसलिये महाराज बाहर की दालान में बैठे रहे। जब वह बाहर आई और देखी कि महाराज यहाँ बिराजमान हैं तो पागल हो गयी। महाराजने उससे पूछा – हे कुंवर ! तुं प्रतिदिन इतनासमय रसोई बनाने में लगाती है तो भजन कब करती है। यह सुनकर कुंवरबा ने कहा आप की आज्ञा क्या है ? महाराज ने कहा भोजन नहीं बनाना मात्र एक सिंघाड़ा खाना। अब वह महाराज की आज्ञा मानकर उसी में सत्य छिपाहुआ है इसलिये एक सिंघाड़ा खाती। विश्वास तो आया लेकिन श्रद्धा नहीं आई। दूसरे दिन से वचनको आचरण में लिया इससे श्रद्धा आगयी ऐसा कहा जायेगा।

एकवार महाराष्ट्र में भयंकर दुष्काल पड़ा। जिससे पशु-पक्षी मनुष्य सभी पानी के लिये परेशान हो गये। यह देखकर सभी भगवान के मंदिर में जाकर प्रार्थना करने को सोचते हैं। सारे लोग इकट्ठा होकर मंदिर में आते हैं, उसमें एक बालक भी छाता लेकर आता है, उसे देखकर सभी को आश्चर्य होता है कि सूखा पड़ा है, पानी बरस नही रहा है तो यह छाता क्यों लेकर आ रहा है। लोगो ने छाता लाने का कारण पूछा – उसने कहा कि इतने लोग भगवान में श्रद्धा रखकर यहाँ प्रार्थना करने आये हैं कि भगवान पानी वरसावे, तो उसी श्रद्धा पर मुझे पूरा विश्वास है कि भगवान पानी वरसावेंगे जिसके लिये मैं अपनी तैयारी के साथ आया हूँ। उसकी सरल श्रद्धा देखकर भगवानने बरसात की सभी लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही।

शबरी की अटूट श्रद्धा के कारण ही भगवान राम ऋषियों के आश्रम से उसके पास चले गये। पार्वती की अडिग श्रद्धा देखकर भगवान शिव के साथ विवाह किया था। इसलिये श्रद्धा ही सर्व श्रेष्ठ है।

हम भी भगवान श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना करें तथा प.पू. गादीवालाजी के चरणों में प्रार्थना करें कि ऐसी ही अडिग श्रद्धा हम सभी में हो और हमारा जीवन सार्थक हो।

●

वडनगर में श्रीहरि की अद्‌भुत लीला

– एक हरिभक्त

ऊँझा से महेसाणा रेलवे मार्ग से जाते समय वडनगर आता है। महेसाणा जिला का खेरालु तहसील का वडनगर एक प्रसिद्ध शहर है। यह शहर बड़ी उंचाई पर बसा हुआ है। यहाँ स्वामिनारायण मंदिर में हवेली भी है। दक्षिण द्वार का यह मंदिर बहुत ही सुंदर है। लालजी महाराज की तथा हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति प्रसादी की है। इस मूर्ति की पूजा के लिये प.पू. आचार्य केशवप्रसादजी महाराज ने सं. १९२४ में दी थी। सं. २०१७ ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी को श्रीहरिकृष्ण महाराज की धातु की मूर्ति को आचार्य देवेन्द्रप्रसादजी महाराजने प्रतिष्ठित किया था।

इस गाँव में श्रीहरि अनेकों बार पधारे थे। जिससे यह भूमि अति पावन है। स्टेशन से उतरकर (शहर में जाते समय दरवाजे के आगे नागर ब्राह्मणों का महादेव का शिवालय है। यहाँ पर श्रीहरि जब पधारते तब दर्शन करने अवश्य पधारते यह भी प्रसादी का मंदिर है। यहीं पर शर्मिष्ठा नाम का एक विशाल सरोवर भी है। इसमें भी श्रीहरि जब भी यहाँ आते अचूक स्नान करते। सरोवर के किनारे नागदेवता का मंदिर है। यहाँ पर श्रीहरि का चरणारविंद प्रतिष्ठित किया गया है। यहाँ पर गणपतिजी, हनुमानजी, शंकर-पार्वती का मंदिर बनाया गया है। यहाँ पर श्रीहरि तीन मास रुककर ब्रह्म भोज किये थे।

वडनगर में अक्षराधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीहरि अनेको बार पधारे थे। इस भूमि को अपने चरण से पवित्र किये हैं। यहाँ पर अनेकों लीला किये साथ में अनेकों चमत्कार भी किये है। जब विसनगर पधारते तब वडनगर अवश्य पधारते।

●

तिलक-चन्दन का क्या महत्व है

– पटेल निसा विष्णुभाई (गुलाबपुरावाला)

अम्बरीष राजा अपनी रिद्धि-सिद्धि के प्रमाणानुसार राज्य चलाते थे। महाराज अंबरीष भगवान के मंदिर में खुद सफाई करते। मंदिर का लेपन स्वयं गाय के गोबर से करते। क्या उनके पास राज्य का अन्य कार्य नहीं था। लेकिन सेवा का कार्य स्वयं करते थे।

एक दिन राजा अंबरीष प्रातः गंगास्नान करके आ रहे थे। सूर्योदय का समय था। एक माताजी एक टोपले में गायका गोबर लेकर बैठी थी। वह प्रतीक्षा करके बैठी थी कोई आवे तो उससे कहकर इस टोपले के गोबर को माथे पर रखा सकू। उसी समय सामने से स्नान करके राजा अंबरीष दिखाई दिये। वे पहचान नहीं पाई क्योंकि प्रातः कालका समय था राजा धोती पहने हुये थे तिलक किये हुये थे, जैसे कोई भक्त आ रहा हो, दूर से ही कहीं कि हे भक्त ? आप मेरे इस गोबर के टोपले को मेरे मस्तक पर रख दो। अंबरीष को आनंद आगया। माताजी मुझे भक्त कह रही हैं। वे वहाँ से राजभवन में आये दैनिक कृत्य करके राजासन पर बैठकर सेवकों को आज्ञा देते हैं कि अमुक स्थान पर एक वृद्धा माताजी रहती है उन्हे बुलाकर ले आओं उनका सन्मान करना है। सेवक आज्ञाका पालन किये, तुरंत उन्हें पालकी में बैठाकर राजभवन में ले आये। वृद्धा माताजी राजा को देखते ही पहचान गयी। अब वे घबड़ाने लगी, कहीं राजा मुझे फांसी की सजा तो नहीं करेंगे। वे भगवान का स्मरण करने लगी। उसी समय दिवान राजा की आज्ञा का पत्र सभा में पढकर सुनाता है कि आज प्रातः काल जिन माताजी ने राजा को भक्त कहकर सम्बोधित किया है उन्हें पांचगाँव बखशीस में देते हैं। आज के जमाने में कोई तिलक चंदन करके निकले और उसे कोई भक्त कहे तो कैसा लगे ? चन्दन-तिलक का स्वरुप छोटा हो जायेगा या तो लगाना ही छोड़ देगें। एक साजिक उदाहरण देते है। कोई कन्या विवाह के बाद यह कहे कि मैं चूड़ी नहीं पहनूंगी। मैं कान-नाक में कुछ नहीं पहनूंगी। इस तरह के सौभाग्य चिन्हों को पहने में शरम आती है। विवाह के बाद पति को स्वीकार करने में संकोच कैसा ? शरम कैसी ? इसी तरह परमात्मा की शरण में जाने के बाद भक्त कहने में क्या संकोच। मैं भक्त हूँ भावपूर्वक कहना चाहिये। एकबार नहीं लाख बार भगवान का भक्त हूँ। इस में शंका का कोई स्थान नहीं।

सत्संग समाचार

श्री नरनारायणदेव के सानिध्यमें अधिकमास के उत्सवों को धूमधाम से सम्पन्न किया जा रहा है

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से भरत खंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में अधिक मास में वर्ष में आने वाले सभी उत्सवों को धूमधाम से मनाया जाता है। अभी तक सम्पन्न उत्सवों का यजमान बनकर हरिभक्त लाभ लिये थे।

समग्र उद्सव में को.पा. दिगम्बर भगत, जे.के. स्वामी, ब्र. राजेश्वरानंदजी, नटु स्वामी, बलदेव स्वामी, राम स्वामी, चेतन भगत तथा प्रफुल्ल खरसाणी की सेवा प्रशंसनीय थी। (शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा के ३१ वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में संपन्न सत्संग सभायें

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराज तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा के ३१ वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में कुल ३१ सत्संग सभा का आयोजन करने में आया था। जो आज तक १७ सत्संग सभा सम्पन्न हो चुकी है। इस सत्संग सभा का हार्द नये लोगो को व्यसन मुक्त करना, दशांश विशांस दान पुण्य करना, इत्यादि समाजोपयोगी कार्य करने का उद्देस्य हैं। ११ वीं सत्संग सभा ता. ३०-६-१२ को श्री स्वामिनारायण मंदिर विहार में हुई थी। जिसमें पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, पू. देव स्वामी, पू. पी.पी. स्वामी, पू. धर्मजीवन स्वामी, पू. कुंजविहारी स्वामीने कथा एवं कीर्तन का लाभ दिया था। जिस में प.भ. हरिभाई भोलाभाई तथा घनश्यामभाई भोलाभाई ने यजमान बनने का लाभ लिया था। ता. १५-७-१२ को १२ वीं सत्संग सभा का आयोजन कलोल में हुआ था। जिसमें पी.पी. स्वामी, चैतन्य स्वामी, सिद्धेश्वर स्वामी, कुंजविहारी स्वामी, अभय स्वामीने कीर्तन-भजन-कथा का सुन्दर लाभ दिया था। जिसके यजमान गिरीशभाई डाह्याभाई गवाडा वाला तथा शैलेषभाई डाह्याभाई गवाडा वाला थे।

१३ वीं सत्संग सभा मुबारकपुर गाँव में - ता. २१-७-१२ को भा हुई। जिस मं पी.पी. स्वामी, देव स्वामी, कुंजविहारी स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामीने कथा की थी।

१४ वी सत्संग सभा माणेकपुर गाँव में ता. २८-७-१२ को सत्संग सभा में पू. पी.पी. स्वामी, सिद्धेश्वर स्वामी, चैतन्यस्वरुप स्वामी, भगतजी इत्यादि संत मंडल ने देव-आचार्य का महत्व बताया था।

१५ वीं सत्संग सभा - रणछोडपुरा गाँव में ता. ११-८-१२ को हुई थी। जिस में पी.पी. स्वामी, सिद्धेश्वर स्वामी, चेतन स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामीने कथा-कीर्तन, भक्ति का लाभ दिया था।

१७ वीं सत्संग सभा भीमपुरा (विजापुर) गाँव में ता. १९-८-१२ को सत्संग सभा हुई। इस सभा में स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, शा.स्वा. सिद्धेश्वरदासजी तथा शा.स्वा. चेतन स्वामीने सुंदर कथा की। (शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में श्रीहरि की कृपा से बाल स्वरुप हनुमानजी महाराज की शरण में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा महंत स्वामी आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से प.भ. हितेषभाई प्रविणभाई पटेल की माताजी के शुभ संकल्प से श्री हनुमान चालीसा पंचान्ह पारायण ता. २४-७-१२ से ता. २८-७-१२ तक शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी पधारे थे। स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी आदि संत भी पधारे थे।

रात्री पारायण में श्री हनुमानजी की कथा का हजारो भक्तोने लाभ लिया। इस प्रसंग पर ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग लगाया गया। सभा संचालन शा.स्वा. गोपालचरणदाजीने किया था। (नरोत्तम भगत)

जेतलपुर में अधिक महीने में उत्सवों की परंपरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू.स.गु.शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी स्वामी तथा स.गु. महंतश्री के.पी. स्वामी की प्रेरणा मार्गदर्शन से जेतलपुर में

श्री रेवतीजी बलदेव हरिकृष्ण महाराज की शरण में पवित्र अधिक महीने में आनेवाले सारे उत्सवो को धूमधाम से मनाया गया । महंत शा.के.पी. स्वामी, शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी, कलोल महंतश्री वी.पी. स्वामी, ब्र. शा.पूर्णानंदजी आदि संतोने समग्र उत्सव में हरिभक्तो को यजमान बनाकर उत्सवों को धूमधाम से मनाया।

(जनकभाई पटेल)

नारणपुरा मंदिर में ज्ञानसत्र पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. ९-८-१२ से १५-८-१२ तक १९ में ज्ञान सत्र में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण स.गु.सा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी के वक्तापद पर तथा प.भ. श्री दरथभाई प्रहलाद पटेल (स्कीम कमिटि सभ्यश्री जमीयतपुरावाला) परिवार के यजमान पद पर हुई थी । सह यजमान पद का लाभ प.भ. विनोदभाई नगीनदास चूड़गर परिवारने लिया।

ता. ८-८-१२ को मुख्य यजमान प.भ. श्री दशरथभाई पटेल के निवास स्थान से पोथीयात्रा धूमधाम से हरिभक्तो के साथ नारणपुरा मंदिर में आयी । समग्र उत्सव का आयोजन स.गु.शा.स्वा. माधवप्रसाददासजीने विधिपूर्वक किया। कथा में आनेवाले समग्र उत्सव श्रीहरि का प्रागट्योत्सव, गादी पट्टाभिषेक, अन्नकूटोत्सव, धूमधाम से मनाये गये । श्रहरिकृष्ण महाराज का केशर स्नान अभिषेक षोडशोपचार पूर्वक किया गया। जन्माष्टमी को रात्र १२ बजे श्री कृष्ण जन्म धूमधाम से मनाया गया। बहनोने अन्नकूट भोग के लिए भिन्न पकवान्न बनाये। इस प्रसंग में पू. संत, यजमान तथा हरिभक्त उत्साह के साथ २० वें ज्ञान सत्र पारायण के लिए ''पटेल पुष्पाबहन जयंतीलाल अंबालाल''ने (नेशनल टांकीवाले) उत्सव में श्रद्धापूर्वक यजमान बनने कं साथ आगामी शाकोत्सव में भी मुख्य यजमान होने का लाभ लिया । धन्य है ऐसे हरिभक्त।

तुलसी विवाह के यजमान निष्ठावान प.भ. रसिकभाई दयालजीभाई सोनी तथा प.भ. डॉ. हर्षदभाई झिंझुवाडियाने जलझीलणी को ठाकुरजी के रात्रि निवास के लिये प.भ. घनश्यामभाई भगवानदास पटेलने (करजीसणवाले) (कुआ) अलौकिक लाभ लिया।

ज्ञानसत्र पारायण प्रसंग पर जेतलपुर में पू.शा.स्वा. आत्मप्रकासधासजी, पू. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (बड़े) अमहदाबाद कालुपुर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, ब्र. पू. राजेश्वरानंदजी, जेतलपुर महंतश्री के.पी. स्वामी, पू. देव स्वामी (महंतश्री नारणघाट), पू. स्वामी जगतप्रकाशदासजी, वी.पी. स्वामी, शा. घनश्याम स्वामी, मूली के पूर्व महंतश्री तथा टोरड़ा, भुज (कच्छ), वडताल तथा गढडा़, जेतलपुर के संतगण पधारे थे । तथा अपनी वाणी का लाभ दिये । कथा में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री प्रत्येक दिवस कथा में पधारी थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री पधारकर यजमान परिवार तथा हरिभक्तों को आशीर्वाद प्रदान किये।

समग्र उत्सव में भोजनालय की सेवा में देव स्वामी (जूनागढ) तथा शा. प्रेमस्वरुपदासजीने (जेतलपुर) सभा संचालन किया । पूर्णाहुति प्रसंग में भक्तजन दर्शन करके प्रसाद लेकर जीवन को धन्य बनाया था । (घनश्यामभाई पटेल, उवारसदवाले)

एप्रोच (बापूनगर) मंदिर में ''हरिबल गीता' का रात्री पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी, लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से पवित्र सावन महीने के उपलक्ष में ता. २३-७-१२ से ३१-७-१२ तक ९ दिन कोठारी स्वामी हरिकृष्णदासजीने सुमधुर संगीत के साथ वैराग्य मूर्ति स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित श्रीहरिबल गीता का रात्री पारायण का सुंदर लाभ हरिभक्तों को दिया था।

कथा की पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। कालुपुर मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने प्रेरक आशीर्वचन किया। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाददेकर ठाकुरजी की संध्या आरती की।

ता. १-८-१२ को दोपहर २-३० से ४-३० तक प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के सानिध्य में महिला शिबीर का आयोजन किया गया।

(गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मथुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-

आशीर्वाद से तथा महंत स.गु.शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी के मार्गदर्शन अनुसार सावन महीने में मंदिर में ठाकुरजी को झूले पर झुलाकर भाविक भक्तों को दर्शन करवाया गया । प्रत्येक सोमवार को युवक मंडल द्वारा शिवजी के समक्ष बरफ बंगला बनाया गया । झूलोत्सव सुशोभन में गिरनारी स्वामी, जयेन्द्र स्वामी, विश्वेश्वर स्वामी, तथा पार्षदो तथा अनेक युवको की सेवा प्रेरणारुप थी ।

(घनश्याम भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पपू. बड़े महराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत शा.स्वा. घनश्याम प्रकाशदासजी की प्रेरणा से पवित्र सावन महीने में ठाकुरजी को भिन्न भिन्न झूलोत्सव में सजाकर झुलाया गया । हरिभक्तोने सुंदर सेवा की । श्रीमद् भागवत ज्ञानसत्र की कथा शास्त्री घनश्याम स्वामी तथा चंद्रप्रकाश स्वामीने की । समूह महापूजा में १०० से भी अधिक भाविकोने लाभ लिया । प्रत्येक, भक्तो को श्री भानुभाई तथा पटेल बाबुभाई की तरफ से फूलहार करवाया गया ।

(जस्मिन मोदी)

बालवा मंदिर में महापूजा

श्रीहरि के चरणों से अंकित प्रसादीभूत बालवा गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से पवित्र सावन महीने में शा. यज्ञप्रकाशदासजी गुरु महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी तथा स.गु. स्वामी मुक्तजीवनदासजीने विदुरनीति ज्ञानयज्ञ की कथा की । अंतिम दिवस पर समूह महापूजा में १०३ हरिभक्तोंने लाभ लिया ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

लिंबोद्रा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से लिंबोद्रा गाँव में सावन कृष्ण पक्ष-८ श्री कृष्ण जन्माष्टमी को मंदिर में श्री कृष्ण जन्मोत्सव श्री नरनारायणदेव बाल मंडल द्वारा पिरामीड बनवाकध्दही-होडी फोडी गयी । प्रत्येक मंदिर में युवक मंडल की दो सभा विशेषरुप से होती है ।(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, रमेशभाई निलेशभाई लिंबोद्रा)

आमजा (बालवा) में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से सावन महीने में बालवा में शा. यज्ञप्रकाशदासजी तथा स्वा. मुक्तजीवनदासजी (कांकरीया मंदिर): द्वारा आमजा गाँव में सत्संग सभा का आयोजन किया गया । हरिभक्तोने प्रत्येक मास एक सभा आयोजित करने का निर्णय लिया । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, आज्मजा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (लवारपुर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से एवं समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से लवारपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने ता. ४-७-१२ से ता. ३-८-१२ तक ठाकुरजी को झुलोत्सव में झुलाया गया ।

(कोठारीश्री लवारपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से बहनो के मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री के १५ वें प्रागट्योत्सव में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धंन बहनोने मिलकर की । (सां. बबुबा कालीयाणा)

श्री स्वामिनारायण महिला सत्संग मंडल

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से हिंमतनगर श्री स्वामिनारायण महिला मंडलने २५ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में रजत जयंती महोत्सव मनाया । इस मंडल की स्थापना प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्रीने की ।

इस प्रसंग में ता. ८-८-१२ तथा १२-८-१२ तक पंच दिनात्मक भागवत दशम स्कंधकथा का आयोजन सां. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर) के वक्तापद पर हुआ । कथा का आरंभ प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री के हाथो हुआ । प्रतिदिन रात्री में सत्संगी बालिकाओ द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया । श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर विशाल रात्री सभा में हिंमतनगर, ईडर, प्रांतिज, तथा टोरडा के संतोने प्रेरणात्मक प्रवचन किया ।

ता. १२-८-१२ को पूर्णाहुति पर बहनो की समूह महापूजा तथा कथा की पूर्णाहुति के समय प.पू.अ.सौ.

गादीवालाश्री के हाथों से आरती उतारी गयी । अंत में प्रत्येक बहनो को प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने आशीर्वाद दिया । पूर्णाहुति पर बहनो को प्रसाद दिया गया । (श्री स्वामिनारायण महिला सत्संग मंडल, हिंमतनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (नांदोल)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदलो में पवित्र सावन महीने में कोठारी विष्णुभाई तथा हरिभक्तोने ठाकुरजी के झूलोत्सव के दर्शन करवाये । भाईओंने तथा बहनोने झूलोत्सव की सेवा थी । (कोठारी विष्णुभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वरनगर, नरोडा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वरनगर नरोडा में सावन महिने में ठाकुरजी की सुंदर झूलोत्सव के दर्शन करवाये । जिसमे रणजीतसिंह चौहाण हाथा भगवानभाई पटेल की सेवा प्रेरणारुप थी । नारायणघाट मंदिर में शा. दिव्यस्वरुप स्वामीने ता. २-८-१२ तक ता. ४-८-१२ तक ९ से १०-३० तक कथामृत अमृतवाणी का लाभ दिया । श्री कृष्ण जन्माष्टमी को कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर से पू. गवैया स्वामी के संत स्वामी हरिजीवनदासजी तथा बलदेव स्वामीने कीर्तन भक्ति का लाभ दिया । (बेचरभाई पी. परमार)

थलतेज अहमदाबाद में तृतीय सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से ता. ५-८-१२ रात्रि ८ से ११ थलतेज में सांग्रीला बंगलोझ (कोमन प्लोट) में भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया । कालुपुर मंदिर के स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, नारणघाट मंदिर के महंत शा. पी.पी. स्वामी तथा शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी तथा अन्य संतोने कथामृत का पान करवाया । घाटलोडीया, मेमनगर तथा नारायणपुरा मंदिर के धून मंडल द्वारा स्वामिनारायण महामंत्र धून की गयी । सभा संचालन पटेल अशोकभाई नारणभाईने किया । सभा के यजमान पटेल कृष्णाकांत शामजीभाई (१० सांगीला मेधरज बंग्लोझने सुंदर लाभ लिया ।

श्री रमेशभाई पटेलने श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण सत्संग मंडल की सत्संग की भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति की जानकारी दी ।

श्री कृष्ण जन्मोत्सव मंडल द्वारा धूमधाम से मनाया । घाटलोडिया में प्रत्येक रविवार तथा एकादशी को सभा का लाभ लेने हेतु अनुरोधहै ।

सभा का स्थान गणेशपार्क कोम्पलेक्ष वि-१ आई.. जे. पटेल स्कुल रोड, गोकुल डेरी के पास, घाटलोडीया, समय रात में ८-३० से १०-३० संपर्क रमेशभाई पटेल : ९४८६४२२६०१, भोलाभाई पटेल : ९९२५८०५४६३ ।

(रमेशभाई पटेल, डांगरवावाले)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली मंदिर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में परंपरागत जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद से प.पू. लालजी महाराजश्री, कालुपुर से महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, नारणघाट से देव स्वामी इत्यादि संत मंडल साथ पधारे थे । मूलीमंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री के पदार्पण पर पू. महंत स्वामी तथा मूली के संत-हरिभक्त पू. लालजी महाराजश्री का भव्य स्वागत किये थे । ब्रह्मानंद सभा में सभा का आयोजन किया गया था, जिससे कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी, सुरेन्द्रनगर के पू. कृष्णवल्लभ स्वामी, पू. जगतप्रकाशदासजी, पू. सूर्यप्रकाश स्वामीने जन्माष्टमी का माहात्म्य तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था । अन्त में प.पू. लालजी महाराजश्री ने श्री राधाकृष्णदेव की छत्रछाया में रहकर सत्संग करने की आज्ञा की थी । सभा संचालन स्वा. कृष्णवल्लभदासजीने किया था । प.पू. लालजी महाराजश्रीने श्री राधाकृष्णदवे हरिकृष्ण महाराज की आरती उतारकर संत मंडल के साथ अमदाबाद पधारे थे। रात्रि १२-०० बजे श्री कृष्ण जन्मोत्सव की आरती धूमधाम से हुई थी । स.गु. महंत स्वा. के मार्गदर्शन में शिष्य मंडल तथा मूली देश के हरिभक्तोंने सुदंर व्यस्था का आयोजन किया था ।

(को.स्वा. कृष्णवल्लभदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा में अखंड महामंत्र धून एवं झूला दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से, स्वा. उत्तमप्रियादसजी एवं स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में श्रावण शुक्ल-११ को श्री स्वामिनारायण महामंत्र की १२ घन्टे तक अखंड धुन की गयी थी । जिस में गाँव के हरिभक्तों ने धुन का लाभ लिया था । श्रावण मास में ठाकुरजी के समक्ष नाना प्रकार के झूलें को सजाकर झुलाया गया था ।

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से आषाढ कृष्ण-११ को बहनो के मंदिर में १२ घन्ट तक अखंड धुन का आयोजन किया गया था । गाँव की समस्त सभी बहन धुन का लाभ ली थी । (पार्षद नीलकंठ भगत)

स्वालोडीयाद गाँव में श्रीमद् भागवत कथा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली मंदिर के श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के पुजारी स्वामी की शुभ प्रेरणा से श्रीहरि समकालीन पू. आधारानंद स्वामी के जन्म स्थान खोलडीयाद गाँव में श्रावण मास के समय स्वा. अभयप्रकाशदासजीने हरिभक्तो को सुन्दर भागवत कथा का रसपान कराया था ।

(कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में आषाढ कृष्ण-२ से श्रावण कृष्ण-२ तक नानाविध झूले को सजाकर उसमें प्रभु को झुलाया गया था । न्युझ पेपर एवं इलेक्ट्रोनिक मिडियाने सुंदर कवरेज किया था । स्वा. प्रेमवल्लभदासजी के मार्गदर्शन में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा हरिभक्तों की सेवा प्रेरणास्पद रही ।

यहाँ पर श्रावण कृष्ण-५ से अमावस्या तक शिक्षापत्री भाष्य की कथा शा. सत्यसंकल्पदासजीके वक्तापद पर हुई थी । प्रतिदिन श्रोताजनो को फलाहार दिया जाता था । सभा संचालन कृष्णवल्लभ स्वामीने किया था । श्री न.ना.युवक मंडलने सेवा की थी ।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

ओलपाड में सुंदर सत्संग सभा

श्रीहरि के अलौकिक दिव्य चरणो से अंकित पावनभूमि ओलपाड गाँव में मूली देश के हालार के हरिभक्त नौकरी धंधा के लिये स्थायी हुये हैं । ये सभी लोग मूल संप्रदाय के चुस्त आश्रित भक्त है । कुछ समय पूर्व प.पू. बड़े महाराजश्रीने नियमित सत्संग सभा करने की आज्ञा की थी । जिस का अक्षरशः पालन किया जाता है । प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर श्रावण मास दरम्यान रात्रि में ८-३० से १०-३० तक कथा हुई थी । प.पू. बड़े महाराजश्रीने फोन पर कथा श्रवण के लिये प्रेमपूर्वक कथा श्रवण की आज्ञा दी थी । इसके लाथ ही दोनो देश के प्रति निष्ठा रखने की वात की थी ।

विदेश सत्संग समाचार

अमेरिका के वोशिंग्टन डी.सी. में मूर्ति प्रतिष्ठा

अमेरिका का केपीटल वोशिंग्टन डी.सी. में बहुत सारे हरिभक्त रहते हैं ।

श्री नरनारायणदेव देश का आई.एस.एस.ओ. के यहाँ पर विशाल शिखरी मंदिर के लिये श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से ९-८ एकड़ (९८०० स्कवार फुट) जमीन-मकान के साथ सम्पादित की गयी है । २४ जुलाई को जिसकी पूजा विधिहै। जिसमें हजारो हरिभक्त उपस्थित होने वाले हैं । इस कार्यक्रम में ता. २५-७-१२ से २७-७-१२ तक सायंकाल ५-३० से ७-३० तक शिक्षापत्री भाष्य की कथा स्वा. रामकृष्णदासजी करेंगे । इस प्रसंग पर पोथीयात्रा धूमधाम से निकाली जायेगी । ता. २८-७-१२ को मूर्ति प्रतिष्ठा की जायेगी । २५ जुलाई सायं ७-३० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा पू. बड़े पी.पी. स्वामी पधारे थे । ता. २७ को रात्रि में प.पू. आचार्य महाराजश्री कथा में पधारे थे । दिव्य भव्य स्वागत किया गया था । प.पू. महाराजश्रीने मुख्यद्वार का उद्घाटन किया था । इसके बाद प्राण प्रतिष्ठा विधिसम्पन्न हुई थी । साथ में यजमान परिवार भी था ।

प्रासंगिक सभा में पी.पी. स्वामी तथा नारायणवल्लभ स्वामी, नरनारायण स्वामी, शा. राम स्वामी इत्यादि संतो ने प्रेरक प्रवचन किया था ।

अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी भक्तों से कहा कि आप सभी के पुरुषार्थ से यह काम सरल हुआ है अतः प्रतिदिन मंदिर आते रहियेगा । प.पू. महाराजश्री के हाथ में चांदी की राखी बांधने के लिये सभी ने १,२१,०००/- डोलर की बोली बोली थी । जिस का लाभ कनुभाई तथा कांतिभाईने लिया था । प.पू.

महाराजश्री तथा पार्षद वनराज भगत को वाल्टीमोट एरपोर्ट पर १-३० तक पहुंचना था लेकिन भक्तों के प्रेम के कारण बिलम्ब तक सभा में रुके रहे । प.पू. महाराजश्री आरती उतारे बाद में सभी भक्तों ने महाराजश्री का पुष्पहार से स्वागत किया था । इसके बाद प.पू. महाराजश्री आटलान्टा जाने के लिये निकल गये थे ।

१० अगस्त शुक्रवार को रात्रि ८ बजे से १२ बजे तक जन्माष्टमी को कोलोनिया से डी.के. स्वामी तथा नरनारायण स्वामी कथा का लाभ दिये थे ।

(कनुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पुजारी निलकंठप्रसाददासजी तथा पूजारी शांतिप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो का १४ वाँ पाटोत्सव तथा जन्माष्टमी धूमधाम से मनाया गया ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् भागवत दशमस्कंधकी कथा स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ नौ संत-पार्षदगण भी पधारे थे । सुबह में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का वेद विधिपूर्वक षोडशोपचार महाभिषेक किया गया ।

प्रासंगिक सभा में पू. शा. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), पू. वासुदेव स्वामी, पू. सूर्यप्रकाश स्वामी, पू. विश्ववल्लभ स्वामी, योगी स्वामी, नरनारायण स्वामी, निलकंठ स्वामी, शांति स्वामी तथा पू. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी आदि संतो की भी अमृतवाणी का लाभ भक्तजनो को मिला ।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा, मंदिर, धर्मकुल, सत्संग, शास्त्र तथा संत इन सभी से परिवार बनता है । इस परिवार को पहचानिये । जिससे अपनापन मिलता है । भगवान की हम सभी पर असीम कृपा है कि उन्होंने हमे यह सब दिया है ।

सभा में पू. पी.पी. स्वामीने प.पू. आचार्य महाराजश्री का संकल्प हैं श्रीहरिकृष्ण महाराज को सुवर्ण अलंकार से सुशोभित करवाना है ऐसी घोषणा की ।

पाटोत्सव प्रसंग में १४ घंटे की अखंड, धुन, महापूजा, यज्ञ, महाभिषेक, अन्नकूट दर्शन, तुलसी विवाह तथा सांस्कृतिक प्रोग्राम किये गये ।

इस प्रसंग में कई नामी हरिभक्तोंने यजमान पद का लाभ लिया । जन्माष्टमी धूमधाम से मनायी गई ।

(वसंत त्रिवेदी, शिकागो)

पारसीप की छपैया में प.पू. लालजी महाराजश्री का प्रगट्योत्सव मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीप में २२ जुलाई रविवार की साम को हरिभक्तोंने मिलकर प.पू. लालजी महाराजश्री का १५ वाँ प्रागट्योत्सव मनाया । सभा में ठाकुरजी के सामने धुन-कीर्तन-कथा वार्ता करके आरती की । श्री ठाकोरभाईने धून की । प.भ. प्रहलादभाई पटेल प.पू. लालजी महाराजश्री की छोटी उम्र से ही देश-विदेश में विचरण करवाकर भावि पीढ़ी को तैयार कर रहे हैं । अभ्यास के साथ सत्संग की प्रवृत्ति भी कार्यरत है ।

(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से कोलोनीया मंदिर के महंत शा. स्वामी ज्ञानप्रकाशदासजी तथा स्वामी नरनारायणदासजी की प्रेरणा से पवित्रा एकादशी को भगवान को पवित्रा तथा राखी शिंगार किया गया । महंत स्वामीने पवित्रा एकादशी के महात्म्य कथा का बोधदिया । समूह में जनमंगल पाठ तथा भोग-आरती की गई । (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा में प्रथम पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स्वामी सत्यस्वरुपदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा का प्रथम पाटोत्सव ता. २९-७-१२ को प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से तथा संतो की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिजीवन ग्रंथ की बाल लीला पारायण जेतलपुर के सुप्रसिद्ध कथाकार

संत पूज्य शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के वक्तापद संपन्न हुई । इस प्रसंग में श्री घनश्याम जन्मोत्सव महापूजा, सांस्कृतिक प्रोग्राम तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का षोडषोपचार महाभिषेक दर्शन का लाभ हरिभक्तोंने लिया।

समग्र महोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. मनहरभाई जयंतीलाल पटेल (वडुवाले) थे। (दक्षेशभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (आई.एस.एस.ओ.) ओस्ट्रेलीया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी में प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाये गये ।

३ जून ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१० श्रीहरि अंतर्ध्यान तिथि के निमित्त श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने विडीयो क्लिप द्वारा गीत संगीत के साथ अंतर्ध्यान के प्रसंग २ घंटे तक हरिभक्तों को दिखाई गयी ।

१ जुलाई ता ५ अगस्त को श्रीहरि वनविचरण कथा की गयी । प्रत्येक महीने में प्रथम रविार को वन निचरण कथा का आयोजन किया गया । वनविचरण की विडीयो दिखाई गयी । चातुर्मास में ४०० हरिभक्तोने शांति पाठ के विशेष नियम लिये ।

गुरु पूर्णिमा प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तसवीर का पूजन अर्चन कर अहमदाबाद मंदिर में आयोजित गुरुपूर्णिमा महोत्सव के दर्शन का वीडियो दिखाया गया ।

प.पू. लालजी महाराजश्री का १५ प्राकट्योत्सव हरिभक्तोंने धूमधाम से मनाया ।

ता. ८-७-१२ से ता. २८-७-१२ तक सावन महीने में ठाकुरजी को विविध झूलोत्सव से सजाया गया ।

ता. १२-८-१२ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से मनायी गयी । ८०० जितने हरिभक्तोंने जन्माष्टमी का लाभ लिया । युवक मंडलने ३ युवानो तथा बाल सभा के २ बच्चों द्वारा श्री कृष्ण बाल लीला प्रस्तुत की । मटकी फोडने का प्रसंग भी मनाया गया। (बिवीन दवे)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (यु.के.) आठवाँ पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजी के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर में श्री हरिकृष्ण महाराज, श्री राधाकृष्णदेव का ८ वाँ पाटोत्सव ता. २२-७-१२ से ता. २९-७-१२ को धूमधाम से मनाया गया ।

इस प्रसंग पर श्री भक्त चिंतामणी ग्रंथ की सप्ताह पारायम पू. स.गु. शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । पू. योगी स्वामीने ठाकुरजी को सुंदर वस्त्रों को धारण करवाकर दर्शन करवाये । संतो की प्रेरणा से ठाकुरजी के झूलोत्सव के दर्शन करवाया । कथा की पूर्णाहुति के बाद शा.स्वा. विश्वविहारीदासजीने यजमानो तथा सेवा करने वाले हरिभक्तों का खुलहार से सन्मान किया । हरिभक्तोंने दर्शन करके महाप्रसाद लिया ।

(किरण भावसार, सहमंत्री)

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

नवावाडज-अमदावाद : प.भ. रतिलाल गोरधनभाई पाटडिया (उ. ६९ वर्ष) ता. १७-४-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

अंबापुर (जी. गांधीनगर) : पटेल कमलाबहन रमणभाई ता. ३०-५-२०१२ को श्रीजी महाराजका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।